तुलसी प्रज्ञा

TULSĪ PRAJÑĀ

वर्ष 28 • अंक 109 • अप्रेल-सितम्बर, 2000

Research Quarterly

अनुसंधान त्रैमासिकी

जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं
(मान्य विश्वविद्यालय)
JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE, LADNUN
(DEEMED UNIVERSITY)

मुक्ति का आरोहक्रम

1. जीव-अजीव का ज्ञान
2. जीवों की बहुविध गतियों का ज्ञान
3. पुण्य, पाप, बन्ध और मोक्ष का ज्ञान
4. भोग-विरक्ति
5. आन्तरिक और बाह्य संयोग-त्याग
6. अनगार-वृत्ति
7. अनुत्तर-संवरयोग की प्राप्ति
8. स्वरूप बाधक कर्मों का विलय
9. केवलज्ञान, केवलदर्शन की उपलब्धि
10. अयोग-अवस्था, सिद्धत्व-प्राप्ति

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ :

भिखुराम जैन

राईस ब्रान मर्चेन्ट

पो. टिटिलागढ़-767 033
जिला ब्लागीर (उड़ीसा)
फोन : 06655-20208, 20387, 20041

तुलसी प्रज्ञा

TULSĪ PRAJÑĀ

Research Quarterly of Jain Vishva Bharati Institute

VOL. 109

April to September, 2000

Patron
Prof. B.C. Lodha
Vice-Chancellor

Executive-Editor & Editor in Hindi Section
Dr Mumukshu Shanta Jain

English Section
Dr Jagat Ram Bhattacharyya

Editorial-Board
Dr Mahavir Raj Gelra, Jaipur
Prof. Satyaranjan Banerjee, Calcutta
Dr R.P. Poddar, Pune
Dr Gopal Bhardwaj, Jodhpur
Prof. Dayanand Bhargava, Ladnun
Dr Bachh Raj Dugar, Ladnun
Dr Hari Shankar Pandey, Ladnun
Dr J.P.N. Mishra Ladnun

Publisher :
Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun-341 306

Research Quarterly of Jain Vishva Bharati Institute

VOL. 109 APRIL-SEPTEMBER, 2000

Editor in Hindi
Dr Mumukshu Shanta Jain

Editor in English
Dr Jagat Ram Bhattacharyya

Editorial Office
Tulsī Prajñā, Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University)
Ladnun-341 306, Rajasthan

Publisher : Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun-341 306, Rajasthan

Type Setting : Rajendra Offset Printer, Didwana-341 303 (Rajasthan)

Printed at : Jaipur Printers Pvt. Ltd., Jaipur-302 015 (Rajasthan)

Subscription (Individuals) Annual Rs. 100, Three Year 250, Life Membership Rs. 1500/-
Subscription (Institutions/Libraries) Annual Rs. 200/-

The views expressed and facts stated in this journal are those of the writers, the Editors may not agree with them.

अनुक्रमणिका / *Contents*

	विषय	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	सम्पादकीय	डॉ. शान्ता जैन	1
2.	पदार्थ संग्रह की चेतना का परिष्कार	आचार्य महाप्रज्ञ	5
3.	दिगम्बर जैन परम्परा में संघ, गण, गच्छ, कुल और अन्वय	डॉ. फूलचन्द जैन 'प्रेमी'	11
4.	सन्त परम्परा की उपयोगिता	डॉ. प्रभाकर माचवे	22
5.	वनस्पति : एक विमर्श	साध्वी विमलप्रज्ञा	31
6.	द्वन्द्व और द्वन्द्व-निवारण	डॉ. सुरेन्द्र वर्मा	41
7.	आचार्य विद्यानन्दकृत नैगमनय तथा नैगमाभास के भेद-प्रभेद	कुमार अनेकान्त जैन	63
8.	संघर्ष निराकरण एवं मानवाधिकार	डॉ. बच्छराज दूगड़	63
9.	भारतीय वाङ्मय में पुरुषार्थ	डॉ. हरिशंकर पाण्डेय	70
10.	श्रावकाचार का नवाचार	मुमुक्षु शान्ता जैन	77
11.	Jainism and Sāṅkhya	Nagin J. Shah	94
12.	The Jaina School of Mathematical Philosophy	Prof. L.C. Jain	104
13.	Jainism and Modern Life	C.C. Shah	118
14.	Peace Through Science of Consciousness	Muni Dharmesh & Dr. B.P. Gaur	124
15.	Despair (विषाद) as explained by Paṇḍitarāja in Rasagaṅgādhara	Dr. Dhananjaya Bhanja	136
16.	Terrorism and Anuvrat	Dr. Anil Dutta Mishra	139

"समाज का मूल व्यक्ति है और व्यक्ति का मूल चैतन्य। चैतन्य की पवित्रता से व्यक्ति और व्यक्ति की पवित्रता से समाज पवित्र बनता है। पवित्रता का आचरण वैयक्तिक होता है और उसका मूल्यांकन सामाजिक।"

- अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ :

श्री तोलाराम हंसराज चेरिटेबल ट्रस्ट

C/o **हंसा गेस्ट हाउस**

आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के पास

नोखा रोड

पो. गंगाशहर, जिला बीकानेर (राज.)

फोन : 272264

Postal Department : NUR 08 R.N.I. No. 28340/75

"व्रत आत्म-संयम से आते हैं। आत्म-विकास के लिए संकल्पपूर्वक स्वीकार किए जाते हैं। व्रत की पहली भूमिका है, श्रद्धा का जागरण, मध्यवर्ती है स्थिरीकरण और अन्तिम है आत्म-रमण।"

- अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ

With Best Compliments From :

AMIT - SYNTHETICS

Shop :
W-3207, Surat Textile Market

Office :
402, Anand Market, Ring Road, SURAT-395 002
Phone : 622076, 625680, 622027 • Fax : 0261-636651

PEMCHAND CHOPRA CHARITABLE TRUST

W-3207, Surat Textile Market, Ring Road
SURAT

JHAMKUDEVI CHOPRA CHARITABLE TRUST

11-A, B, Sai Ashish Society
Udhana Magdalla Road
SURAT

प्रकाशक - सम्पादक - डॉ. मुमुक्षु शान्ता जैन द्वारा जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं के लिए प्रकाशित एवं जयपुर प्रिण्टर्स, जयपुर द्वारा मुद्रित